मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MJY–006

स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)

(एम. ए. जे. वाई.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.जे.वाई.-006 : गणित, ग्रहण, वेध एवं मंत्रादि

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है।*

(ii) दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।

(iii) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।* 3×20=60

1. अनेक वर्ण षड्विध को किसी **एक** उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

2. वैदिक गणित का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3. ग्रहण के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए उसके महत्व को रेखांकित कीजिए।

4. सूर्यग्रहण के सम्भवासम्भवत्व को निरूपित कीजिए।

5. ग्रहण–जन्य–अशुभफल का निवारण किस प्रकार होता है ? इसका विस्तार से वर्णन कीजिए।

6. शृंगोन्नति–साधन के उपकरणों का सविस्तार निरूपण कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।* $4\times10=40$

7. वर्ग एवं वर्गमूल का सोदाहरण परिचय दीजिए।

8. गोलीय त्रिकोणमिति की द्वितीय प्रतिज्ञा का निरूपण कीजिए।

9. 'भूभा' से क्या अभिप्राय है ? इसके साधन का सूत्र लिखिए।

10. लम्बन एवं नति की व्याख्या कीजिए।

11. भन्ग्रह्युति काल का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त करते हैं ?

12. पात के स्वरूप एवं उसके शुभाशुभत्व का वर्णन कीजिए।

13. सूर्य-संक्रान्ति की विविध संज्ञाओं का उल्लेख करते हुए उसके महत्व को प्रतिपादित कीजिए।

14. भारतीय वेधशालाओं की परम्परा का उल्लेख कीजिए।

× × × × ×